DAINIK JAGRAN NATIONAL EDITION 31 May 2023, PAGE 9

मंथन

लोक कल्याण का प्रतीक सेंगोल

शिव के विग्रह के रूप में धर्मदंड सेंगोल को उसकी सांस्कृतिक-वैचारिक महिमा और सर्वसमावेश के प्रतिनिधि प्रतीक के रूप में समझा जाना युक्तियुक्त होगा

प्रो. आलोक कुमार राय
कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय

डा. भुवनेश्वरी भारद्वाज
एसोसिएट प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय

सेंगोल की पुनर्स्थापना से विरासत को मिला सम्मान। फाइल

भारत के नए संसद सदन का उद्घाटन और उसमें धर्मदंड सेंगोल की स्थापना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा की जा चुकी है। 14-15 अगस्त, 1947 की मध्यरात्रि में प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के प्रसिद्ध भाषण से पूर्व हुए सेंगोल संबंधी तत्कालीन कार्यक्रमों-अनुष्ठानों का विवरण उस समय के देसी-विदेशी समाचार पत्र-पत्रिकाओं की रिपोर्ट में दर्ज है। लैरी कालिंस-डामिनिक लैपियर की 'फ्रीडम एट मिडनाइट' (1975) में भी उसके विवरण अंकित किए गए हैं। कहा जाता है सत्ता-हस्तांतरण के संदर्भ में लार्ड माउंटबेटन ने पं. नेहरू से किसी भारतीय प्रतीक के विषय में जिज्ञासा व्यक्त की, जैसे कि ब्रिटिश परंपरा में है। पं. नेहरू ने चक्रवर्ती राजगोपालाचारी यानी राजा जी से इस विषय में चर्चा की। राजा जी ने भारत के सर्वाधिक दीर्घजीवी राजवंशों में से एक शिवभक्त चोल राजाओं की राजसत्ता हस्तांतरण की अनुष्ठान परंपरा से प्रेरणा लेते हुए धर्मदंड सेंगोल की परंपरा को चिह्नित किया तथा शैव परंपरा के पुरातन प्रसिद्ध मठ थिरुवावदिथुरई आदिनम के मार्गदर्शन में उसी प्रारूप का सेंगोल तैयार करवाया। मठ के प्रतिनिधि संत-पुरोहितों ने पारंपरिक विधि-विधान से धर्मदंड सेंगोल को नेहरू को प्रदान किया। उस अवसर पर प्रसिद्ध शैव संत थिरुज्ञान संबंदर द्वारा रचित शिवस्तुति कोलारु पधिगम का उच्चारण किया गया। सातवीं शताब्दी के तमिल संत कवि तिरुज्ञान संबंदर की गणना प्रमुख 63 शिवभक्त नायनारों में की जाती है।

अब जबकि भारतीय लोकतंत्र के मंदिर में धर्मदंड सेंगोल की विधिवत प्रतिष्ठा की जा चुकी है, तब इसकी शिवता की सांस्कृतिक सनातनता, प्रतीकात्मकता और उपादेयता पर विमर्श का प्रसंग स्वयमेव ही उपस्थित हो जाता है। भारतवर्ष में आजादी का अमृतकाल चल रहा है। यह एक सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में भारतवर्ष की सनातनता का उद्घोषक है। इस अमृतकाल में अमृत शब्द इस तत्व का संकेतक है कि हमारा राष्ट्र स्थूल भौतिक उपादानों से निर्मित या उन पर निर्भर नहीं है, अपितु ये भौतिक उपादान इसे केवल विशिष्ट देश और काल की सीमाओं में अभिव्यक्त मात्र करते हैं। वस्तुतः एक सांस्कृतिक निरंतरता के रूप में भारतवर्ष एक 'मृत्युंजय राष्ट्र' है और इसीलिए यह सांस्कृतिक-राष्ट्र सनातन है, जिसका तत्व है-अमृत। विश्व की सारी सभ्यताओं का इतिहास इसी अमृत तत्व के अन्वेषण का विवरण है, जो कि भारतीय सनातन संस्कृति को सहज ही उपलब्ध रहा है।

शिव 'समावेश', 'समरसता' और 'लोक कल्याण' के प्रतीक हैं। शिव का अर्थ है कल्याण या मंगल। 'कल्याणकारी राज्य' एवं 'लोकतंत्र' के आग्रही जानते हैं कि शिव की प्रसिद्ध उपाधि है-लोकनाथ। वह समता और समावेश के प्रतिनिधि देवता हैं। वह अपना पद, स्थिति और सर्वस्व खेल-खेल में ही अपनों को दे देते हैं। उनका होने का अर्थ है-उनमें समरस होना, वहां अपूर्ण या पक्षपातपूर्ण कुछ भी नहीं है। वह रावण के भी उतने ही हैं, जितने राम के। किंतु इस निष्पक्षता और सर्वसुलभता में जब लोकरक्षा, लोकव्यवस्था और न्यायपूर्णता का प्रश्न आता है, जब प्रत्येक बड़ी मछली अपने से छोटी मछली को निगलने को उद्यत हो उठती है, तब महेश्वर शिव स्वयं ही धर्मदंड का रूप लोक की रक्षा और व्यवस्था के लिए धारण करते हैं। और ऐसा भगवान शिव ने लोकसंग्रह और लोकहित के लिए ही किया है।

अराजक शब्द का अर्थ ही है 'कोई राजा न होने की स्थिति'। समतामूलक निष्पक्ष शासन व्यवस्था के लिए राजा आवश्यक है, लेकिन राजा स्वयं शिव के स्वरूप धर्मदंड या सेंगोल से ऊपर नहीं है। महान तमिल ग्रंथ तिरुक्कुरल में सेंगोल विषयक अध्याय में स्पष्ट कहा गया है कि राजा की स्थिति और विजय उसके शस्त्रास्त्रों पर निर्भर नहीं होती, अपितु धर्मदंड के न्यायपूर्ण संचालन पर निर्भर होती है। भारत में राज्यारोहण के कर्मकांड से संबंधित एक अनुष्ठान भी इसी भाव को व्यक्त करता है। सिंहासनारूढ़ होने के बाद नया राजा उद्घोषणा करता है कि 'मैं अदंड्य हूं, कोई मुझे दंडित नहीं कर सकता'। इसके बाद महापुरोहित धर्मदंड से उसके राजमुकुट को थपथपाता हुआ उसे यह याद दिलाता है कि वह भी धर्म द्वारा दंड्य है। इसलिए शिव के विग्रह के रूप में धर्मदंड सेंगोल को उसकी सांस्कृतिक-वैचारिक महिमा और सर्वसमावेश के प्रतिनिधि प्रतीक के रूप में समझा जाना युक्तियुक्त होगा।